International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

डॉ. सुनीता मीना, सह–आचार्य (इतिहास)
शहीद कैप्टन रिपुदमनसिंह, राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर

इतिहास में महिलाओं की भूमिका का दस्तावेजीकरण करना आसान नहीं है। मुख्यधारा के ऐतिहासिक विवरणों में अधिकांशतः महिलाओं की अदृश्यता से संबंधित ही जानकारी प्रदान की गई है। विभिन्न विवरणों में महिलाओं की भूमिका की तलाश की जा रही है। महिलाओं द्वारा लिखी गई आत्मकथाएँ, व्यक्तिगत डायरियाँ, और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लिखे उनके लेखों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भी महिलाओं की किसी तरह भूमिका के लिए इन्हीं तरह के स्रोतों पर ही अधिकांश आश्रित रहना होगा। भारत की महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान ही नहीं दिया बल्कि इतिहास भी रचा है.गांधीजी ने कहा था, भारत में ब्रिटिश राज्य मिनटों में समाप्त हो सकता है, बशर्ते भारत की महिलाएं ऐसा चाहें और इसकी आवश्यकता को समझें, उनके इस आह्वान का उत्तर सबसे पहले उनकी ही पत्नी कस्तूरबा गांधी की ओर से मिला. राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़चढ़ कर भाग लेने वाली महिलाओं में मैडम कामा, भगिनी निवेदिता एनी बेसेंटोपडिता रमाबाई सरोजिनी नायडू, कमला नेहरू, मणिबेन पटेल, विजयलक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी, प्रभावती देवी तथा ऐसी अनेक अन्य महिलाएं शामिल थीं जिन्होंने अपने देश को स्वतंत्र देखने की खातिर अपने परिवार की परवाह नहीं की. अहिंसा में पूरा विश्वास न करने वाली कई महिलाएं भी आंदोलन में शामिल हुईं और उन्होंने क्रांतिकारी तरीके से नए भारत के निर्माण में योगदान किया.। ऐसी महिलाओं में शहीद भगत सिंह की सहयोगी दर्गा भाभी सत्यवती देवी खुर्शीद बहन लाडो रानी जुत्शी, अरुणा आसफ अली, विषा मेहता, प्रीतिलता वड्डेदार के साथ दुर्गाबाई देशमुख और अम्मू स्वामिनाथन जैसी सुप्रसिद्ध महिलाएं भी शामिल थीं जिन्होंने सक्रिय सामाजिक सेवा के माध्यम से देश हित में कार्य किया.। गांधीजी कहते थे अगर ऊंचे दर्जे का साहस विकसित कर दिया जाए तो भारतीय महिलाएं स्वाभाविक नेता हैं।

गांधीजी के भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का बिगुल बजाने से पहले ही मैडम कामा ने 1907 में सरदार सिंह राणा के साथ तिरंगा झंडा फहराया था, उस समय उनकी उम्र 46 वर्ष थी. अपने प्रेरणादायक भाषण में उन्होंने कहा, ष्यह ध्वजा भारत की स्वतंत्रता की है. देखो इसने जन्म लिया है. मातृभूमि के लिए शहीद नौजवानों के रक्त से यह पहले ही पवित्र हो चुकी है. देवियों और सज्जनों, मैं आप सबका आह्वान करती हूं कि आप भारतीय स्वाधीनता की इस ध्वजा का खड़े होकर अभिवादन करें यह भाषण जर्मनी के शहर स्टूटगर्ट में इंटरनेशनल सोशलिस्ट कान्फ्रेंस के अवसर पर दिया गया. उनके आह्वान पर सभी प्रतिनिधियों ने खड़े होकर स्वाधीनता की ध्वजा का अभिवादन किया. जब 22 साल के देशभक्त नौजवान और विद्यार्थी मदन लाल ढींगरा को 1909 में लंदन में फांसी दी गई तो मैडम कामा ने कहा था, इस समय मदन लाल जैसे और नौजवानों की आवश्यकता है वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के साथ उन्होंने मदन तलवार नाम की एक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पत्रिका शुरू की जो बर्लिन से .छपती थी.। शीघ्र ही यह पत्रिका विदेशों के तमाम भारतीय क्रांतिकारियों के विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनी. ।

मैडम कामा ने भाषण दिया की हमारे सबसे अच्छे लोगों को देशनिकाला दिया जा रहा है या अपराधियों की तरह जेलों में भेजा जा रहा है. वहां उन्हें कोडे लगाए जाते हैं ताकि उन्हें मजबूर होकर अस्पताल जाना पड़े. हम शांति चाहते हैं. हम खून–खराबा नहीं चाहते. लेकिन हम जनता को उनके अधिकारों के बारे में बताना चाहते हैं ताकि वे ब्रिटिश तानाशाही को उखाड़ फेकें। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंसा के इस्तेमाल के ब्रिटिश आलोचकों को जवाब देते हुए मैडम कामा ने कहा, कुछ समय पहले तक मुझे हिंसा के बारे में बातचीत करने तक से घृणा होती थी लेकिन उदारवादियों की हृदयहीनता, पाखंड और दुष्टता को देखकर मेरी घृणा दूर हो गई है. जब हमारे दुश्मन हमें हिंसा के लिए बाध्य कर रहे हैं तो हम इसके इस्तेमाल की निंदा क्यों करें. हम ताकत का इस्तेमाल इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हमें ऐसा करने को विवश किया जा रहा है निरंकुशता ही है और अत्याचार अत्याचार ही है, चाहे उसका इस्तेमाल कहीं पर भी किया जाए. सफलता से किसी कार्य का औचित्य सिद्ध होता है. विदेशी शासन के खिलाफ सफल विद्रोह देशभक्ति है. मित्रों! आओ हम अपनी तमाम बाधाओं, संदेहों और आशंकाओं को एक तरफ रख देंऽ . मैडम कामा ने भगत सिंह और उनके सहयोगियों के मन पर भी जबरदस्त असर डाला. क्रांति की जननी के नाम से प्रसिद्ध मैडम कामा ने देशवासियों का आह्वान किया कि वे विदेशी शासन के जुए को उतार फेंकने का संकल्प लें. सीधे वार करना सीखो. क्योंकि वह दिन दूर नहीं जब हमें अपनी इस जान से ' प्यारी मातृभूमि से अंग्रेजों को मार भगाना होगा दुर्गावती और सुशीला देवी शहीद भगत सिंह के युग की दो बहने थीं जिन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. दुर्गावती क्रांतिकारियों में दुर्गा भाभी के नाम से प्रसिद्ध थीं. भगत सिंह ने सान्डर्स की हत्या करने के बाद 18 दिसम्बर 1928 को दुर्गा भाभी के साथ ही कलकत्ता की यात्रा की. लाहौर रेलवे स्टेशन से पुलिस की आंख बचाकर निकल पाना असंभव था. मगर भगत सिंह और दुर्गा भाभी ने इसे संभव कर दिखाया. यहां यह बताना उचित होगा कि साइमन कमीशन के विरोध में आंदोलन का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय की मृत्यु सान्डर्स की लाठियों से हुई थी.

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के क्षितिज में वह एक नक्षत्र की तरह अचानक उभरी और उन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखेदव, राजगुरु और अशफाकुल्ला खां जैसे क्रांतिकारियों के मन पर जोरदार असर डाला. दुर्गा भाभी प्रो. भगवती चरण वोहरा की पत्नी थी. ब्रिटिश पुलिस उनके नाम से थर्राती थी. ये तब की बात है जब गिरफ्तारी देने पर लड्डू बांटे जाते थे, जब गिरफ्तारी का समन लेकर आए पुलिस वाले का स्वागत किया जाता था. उनका समूचा जीवन आत्म–बलिदान की कविता जान पड़ता है. दुर्गावती नौजवान भारत सभा की सक्रिय सदस्य थीं. वह उस समय सबकी नजरों में आयीं जब सभा ने 16 नवम्बर 1926 को लाहौर में करतार सिंह सरभा का 11वां शहीदी दिवस मनाने का फैसला किया. आपको याद होगा कि करतार सिंह सरभा सिर्फ 19 साल की उम्र में फांसी के फंदे पर झूल गए थे. उन्होंने छावनी के सिपाहियों में विद्रोह फैलाकर ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की योजना बनायी थी. दुर्गा भाभी और भगत सिंह के लिए तो सराभा महानायक थे. शहीदी दिवस के अवसर पर दुर्गा भाभी और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उनकी बहन सुशीला देवी ने सरभा का आदमकद चित्र तैयार किया. जब प्रो. वोहरा ने रणचंडी के रूप में देवी दुर्गा का बखान । करते हुए अपना भाषण समाप्त किया तो दुर्गा भाभी ने अपनी नसों से खून निकाल कर भगत सिंह के माथे पर इसका तिलक लगाया और उनके लक्ष्य में सफलता का आशीर्वाद दिया. दुर्गा भाभी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन 17 दिसम्बर 1928 को था जब सान्डर्स का वध कर भगत सिंह और सुखदेव आगे की कार्रवाई तथा सलाह के लिए उनके घर गए. दुर्गा भाभी ने ही उनके कलकत्ता जाने की योजना बनायी. अंग्रेज साहब की वेशभूषा में भगत सिंह दुर्गा भाभी और उनके बच्चे के साथ कलकत्ता मेल से रवाना हुए. लाहौर रेलवे स्टेशन पर पुलिस का कड़ा पहरा था और यात्रियों से कहीं ज्यादा पुलिसकर्मी नजर आते थे. उसी रेलगाड़ी में चंद्रशेखर आजाद साधु के वेष में यात्रा कर रहे थे. लाहौर रेलवे स्टेशन से उस शाम बच निकलना किसी चमत्कार से कम नहीं था. स्थिति लगभग वैसी ही थी जैसी शिवाजी के आगरा के किले से भागते समय या नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कलकत्ता से बर्लिन जाते समय रही थी. भगत सिंह को फांसी दिए जाने के बाद दुर्गा भाभी खुलकर क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़ी. उन्होंने पंजाब के पूर्व गवर्नर और क्रांतिकारियों के कट्टर दुश्मन लॉर्ड हेली को मारने का फैसला किया. हालांकि हेली नहीं मर सका मगर उसके साथी मारे गए. दुर्गा भाभी गिरफ्तार कर ली गईं और उन्हें तीन साल की जेल की सजा सुनाई गई. आजादी के बाद दुर्गा भाभी लगभग गुमनामी की जिन्दगी जी रहीं थीं. 15 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद में 92 वर्ष की उम्र में उनका देहान्त हुआ. मृत्यु ने भले ही उन्हें दुनिया से दूर कर दिया हो, मगर स्वतंत्रता के क्रांतिकारी आंदोलन की इस महान नायिका की कीर्ति अमर रहेगी. उनकी गिनती कल्पना जोशी और बीना दास जैसी महान महिला क्रांतिकारियों के साथ होगी. जब तक एक भी बच्चा जीवित है, न तो मैं सरकार को चौन से रहने दूंगी और न खुद आराम करूंगी,—यह घोषणा सत्यवती ने दिल्ली में 1930 में की थी. दिल्ली में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें स्वामी श्रद्धानंद की इस महान पुत्री का तेजस्वी मुखमंडल याद होगा. भारत की आजादी उनके जीवन का एकमात्र ध्येय था और उसके पीछे वह जुनून की हद तक समर्पित थीं. अपने जीवन के कुल 37 वर्षों में से 12 वर्ष उन्होंने जेलों में बिताए और एक बार तो गोद में नवजात शिशु के साथ भी गईं. गिरफ्तारी के लिए आए ब्रिटिश पुलिस अफसर से उन्होंने चिल्लाकर कहा, मुझे मत छूना, मैं भारत की अग्नि वे ग्यारह बार जेल गईं और देश की आजादी से दो साल पहले उनका देहान्त हुआ. वह स्वदेशी आंदोलन के प्रति समर्पित थी. उन्होंने विदेशी कपड़ों की होली जलायी. शराब की दुकानों का विरोध किया, ब्रिटिश सामान और कपड़ों के बहिष्कार में बढ़चढ़ कर आगे आयीं तथा गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रहीं. अगर भारत में उन जैसी कुछ और महिलाएं होती तो हमारे देश का इतिहास कुछ और होता. लाडो रानी जुत्शी लाहौर के एक वकील की पत्नी थीं. अपनी दो पुत्रियों जनक कुमारी जुत्शी और स्वदेश कुमारी जुत्शी के साथ उन्होंने पंजाब, खासतौर पर लाहौर में सविनय अवज्ञा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. उन्होंने महिला सत्याग्रहियों का एक नया आंदोलन आरंभ किया. वे लाल सलवार, हरी कमीज और सफेद टोपी पहनती थीं और स्वदेशी तथा मद्य निषेध की प्रबल समर्थक थीं. देशभक्ति और निर्भयता लाडो रानी में कूट—कूट कर भरी थी और वे आत्म—बलिदान व त्याग की प्रतिमूर्ति थीं. जब कोई सरकार महिलाओं को गिरफ्तार

करना शुरू करे तो समझो उसके दिन गिनती के रह गए हैं– यह बात वे अकसर कहा करती थीं. वे आदर्श गांधीवादी थीं तथा शांतिपूर्ण व अहिंसक प्रतिरोध का प्रबल समर्थन करतीथीं.

बम्बई की आशा मेहता एक अलग तरह की क्रांतिकारी थी. उन्होंने अपने फ्रीडम रेडियो के माध्यमसे स्वतंत्रता की मशाल को जलाए रखा. आशा मेहता . अत्यंत प्रतिभाशाली महिला थी. डॉ. राम मनोहरलोहिया के शब्दों में वह विलक्षण साहस और अद्वितीय उपलब्धियों वाली महिला थीं. उनकी जीवन गाथा किसी जासूसी उपन्यास से कम रोचक नहीं है.आशा मेहता गांधीजी के भारत छोड़ो आंदोलन से लोगों की नजरों में आयीं. उन्होंने वॉइस ऑफ द्य फ्रीडम नाम का एक रेडियो स्टेशन स्थापित किया.महाराष्ट्र की एक अन्य युवती खुर्शीद बहन ने पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में कार्य किया और पश्तोभाषी स्वाधीनता सेनानियों में एक गाथा बन गयीं. 1942 के आंदोलन की महानायिका अरुणाआसफ अली किसी और ही चीज की बनी थीं. प्रारंभ में वे गांधीवादी थीं, मगर बाद में अहिंसा के बारे में उनके दृष्टिकोण में बदलाव आया. वह कई वर्षों तक भूमिगत रह कर कार्य करती रहीं. बम्बई में उन्होंने राष्ट्र ध्वज फहराया. वे दिल्ली की महापौर भी बनीं और सभी पार्टियों की प्रशंसा की पात्र बनी. अरुणा आसफ अली प्रखर वक्ता थीं और बड़ी, सहज व सुंदर शैली में लिखती थीं. डॉ. राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण के साथ उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की समाजवादी शाखा की स्थापना की. भारत की महिलाओं ने देशवासियों को यह जता दिया है

आजादी की लड़ाई अकेले पुरुषों ने नहीं लड़ी, इसमें महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है. महिलाओं के योगदान में बौद्धिक स्तर पर जो कमियां थीं उन्हें सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित और सुचेता कृपलानी जैसी विदुषियों के साथ–साथ एमएस सुब्बुलक्ष्मी और सात समुद्र पार विदेशों में स्वतंत्रता संघर्ष में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर योगदान करने वाली कैप्टन लक्ष्मी सहगल भी शामिल हैं.। आजाद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेंट की प्रमुख के नाते कैप्टन लक्ष्मी सहगल नेताजी की सबसे विश्वस्त और वफादार सहयोगी थीं. जब नेताजी ने स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की और अंडमान–निकोबार द्वीपों का नाम बदल कर शहीद और स्वराज द्वीप घोषित किया तो उन्होंने लक्ष्मी सहगल को आजाद हिंद मंत्रिमंडल में मंत्री बनाया. आजाद हिन्द फौज कैसे असफल हुई यह अलग कहानी है. लेकिन इसमें भारतीय महिलाओं ने जो भूमिका अदा की वह हमारी आजादी की लड़ाई का स्वर्णिम अध्याय है. सरोजिनी नायडू हमारे स्वाधीनता आंदोलन की , कोकिला कही जाती हैं. नेहरूजी को एक पत्र में उन्होंने लिखा था, चुनाव में विजयी होने पर जब आपका ना अभिनंदन किया जा रहा था तो उस समय आपका चेहरा देखकर मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं आपको एक साथ राज्याभिषेक और सूली पर चढ़ाए जाते देख रही हूं. निश्चय ही ये दोनों बातें आज एक–दूसरे का पर्याय बन चुकी हैं और उन्हें अलग करना संभव नहीं है. खासतौर पर आपके लिए, क्योंकि आप आध्यात्मिक उत्तर देने और प्रतिक्रिया व्यक्त करने में इतनी संवेदनशीलता दिखाते हैं. कमजोरी, पतन, झूठ और धोखेबाजी जैसी कुरूपताओं से निपटने में आपको कम संवेदनशील तथा अल्प बोध व अनुभूति वाले स्त्री–पुरुषों की तुलना में सौ गुना ज्यादा कटुता का सामना करना पड़ेगा.... ये सब कमजोरी के ऐसे अनिवार्य लक्षण हैं जिनमें आक्रमकता और दिखावे के साथ अपनी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दरिद्रता को छिपाने का प्रयास किया जाता मेरा हृदय रोग काफी गंभीर और खतरनाक चरण में पहुंच चुका है. लेकिन जब तक मैं भारत की शहादत की करुण गाथा गाकर दुनिया के हृदय को पश्चात्ताप के लिए विवश नहीं कर दूंगी, तब तक मुझे कुछ नहीं होगा सरोजिनी नायडू स्वाधीनता आंदोलन की गाथा लिखने वाली कवयित्री थीं. वे भारत के स्वाधीनता आंदोलन की इतिहासकार कवयित्री थीं. ब्रिटिश अधिकारी उनसे डरते थे और ब्रिटिश पुलिस घबराती थी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक बार उन्होंने घुडसवार पुलिस वाले को कहा था, मेरे पास मत फटकना, मैं तुम्हारा सर्वनाश कर दूंगी कहा जाता है कि जब सरोजिनी नायडू डांडी में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व कर रही थीं तो पुलिस के घोड़ों तक ने आगे बढ़ना बंद कर दिया था. कपूरथला की पूर्व रियासत की राजकुमारी अमृतकौर 16 वर्ष तक गांधीजी की सचिव रहीं. वे स्वतंत्र भारत की प्रथम स्वास्थ्य मंत्री भी बनी. वे कई बार जेल गयीं और कई बार उन्होंने लाठियां झेली. पंजाब में फौजी शासन के दौर में वह गांधीजी के संपर्क । में आयीं और उन्होंने शाही तड़क–भड़क छोड़ कर गांधीजी के आश्रम में जाने का निर्णय किया.

स्वतंत्रता संग्राम के सिलसिले में नमक सत्याग्रह के दौरान जो एक और नाम सामने आया वह था दुर्गाबाई देशमुख का. लौह महिला के नाम से मशहूर दुर्गाबाई देशमुख ने ब्रिटिश कानून का उल्लंघन करते हुए 1930 के दशक में आंध्र महिला नाम की पत्रिका का संपादन किया. इन महिला सामाजिक आंदोलनकारियों ने अपने सामाजिक कार्यों से स्वाधीनता आंदोलन का दायरा बढ़ाया. बारदोली सत्याग्रह के समय मणिबेन पटेल ने महिलाओं को संगठित कर इसमें भागीदार –बनाया. इस तरह स्वाधीनता आंदोलन में शामिल महिलाओं के नामों की तो कोई कमी नहीं है मगर यहां एक और नाम का जिक्र करना उचित होगा–वह है आजाद हिन्द फौज की कर्नल लक्ष्मी की माता अम्मू स्वामिनाथन का जिन्हें प्यार से चेरी अम्मा के नाम से भी जाना जाता है. वे ऑल इंडिया वीमन्स कांफ्रेंस मद्रास की संस्थापक सदस्य थी. 1934 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुईं और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी. अहिंसा और गांधीवादी अर्थशास्त्र में उनकी गहरी आस्था थी. संविधान सभा की सदस्य भी रहीं और उन्होंने सामाजिक न्याय तथा स्त्री–पुरुष समानता पर आधारित नये भारत का हमेशा समर्थन किया.

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी से आजादी की प्रक्रिया तेज हुई और इसमें प्रगति का सिलसिला आगे बढ़ा. कैसी विडम्बना है कि जिस भारत की स्वतंत्रता के लिए महिलाओं ने इतना महत्वपूर्ण और अमूल्य योगदान किया, उसे हासिल करने के 71 साल बाद भी महिलाएं संसद में अपना प्रतिनिधित्व बढाने के लिए आज भी लड़ाई लड़ रही हैं.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भः–

1 मनमोहन कौर, रोल आफ इंडियन वीमेन इन फ्रीडम मुवमेंट, दिल्ली, 1968
2 सुमित सरकार, माडर्न इंडिया, मद्रास, 1983
3 अरुणा आसफ अली, द रिसर्जेन्स आफ इंडियन वीमेन, नई दिल्ली, 1991
4 बिपन चंद्र और अन्य, इंडियाज स्ट्रगल फार इंडिपेन्डेन्स, नई दिल्ली, 1989
5 जी. अलोसियस, नेशनलिज्म विदाउट ए नेशन इन इंडिया, दिल्ली, 2009
6 गेल मिनो, द खिलाफत मूवमेन्ट, दिल्ली, 1982
7 जेराल्डीन फोर्बीस, वीमेन इन माडर्न इंडिया, नई दिल्ली, 1996
8 कुमकुम संगारी, सुदेश वैद, रिकास्टिंग वीमेन, नई दिल्ली, 1986
9 लीला कस्तूरी, वीना मजुमदार, वीमेन एंड इंडियन नेशनलिज्म, नई दिल्ली, 1994
10 रविन्दर कुमार, द मेकिंग आफ ए नेशन, दिल्ली, 1989
11 विशालाक्षी मेनन, इंडियन वीमेन एंड नेशनलिज्म, नई दिल्ली, 2003